शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई-पत्रिका
वर्ष–2, अंक–11, माह–नवंबर 2024

आशीर्वाद : प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा
प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, ईंटालीखेड़ा

।। श्री गणेश दत्त गुरुभ्यो नमः।।

सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव

7 से 15 नवंबर 2024

आत्मीय निमंत्रण

इष्टदेव एकलिंगनाथ एवं माँ जगदम्बा के आशीर्वाद
तथा हमारी महान शक्तिपात साधन की
गुरु परंपरा की असीम कृपा से

अनंतकोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज श्रीसद्गुरु
योगिराज वामन दत्तात्रेय गुळवणी महाराज
की परम शिष्या
प. पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद
राजयोगी प्रभु बा का

सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव

आपके साधक परिवार (वासुदेव कुटुंब) द्वारा
आयोजित किया जा रहा है

तिथि :- त्रिपुरारि पूर्णिमा, 15 नवंबर 2024
समय :- संध्याकाल 6:00 बजे
स्थान :- शिव शक्ति सिद्धपीठ एवं ध्यान साधना केन्द्र गुरुद्वार
श्री काशी शिवपुरी आश्रम, ईंटालीखेड़ा
इन अति पावन और दुर्लभ क्षणों के साक्षी बनने हेतु
आप सपरिवार आमंत्रित हैं

महोत्सव समिति अध्यक्ष :
प.पू. बाबा महाराज, प्रमुख-त्रिपदी परिवार व नाना महाराज तराणेकर संस्थान
निवेदक :
समस्त साधक परिवार व एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट

सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव एवं अनुष्ठान का संपूर्ण कार्यक्रम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

महामंत्र की अखंड नाम जप साप्ताहिकी

आयोजक - समस्त USA साधक परिवार

गुरुवार 7 नवंबर से गुरुवार 14 नवंबर 2024 तक

शिव शक्ति महायज्ञ

9 नवंबर, कार्तिक शुक्ल अष्टमी से

13 नवंबर, कार्तिक शुक्ल द्वादशी तक

दीपोत्सव (लक्ष दीप प्रज्वलन)

13 नवंबर बुधवार, रात्रि 8:00 बजे

श्री सद्गुरु गुळवणी महाराज की भव्य पालकी यात्रा

14 नवंबर, संध्याकाल 4:00 बजे से

सद्गुरुदेव की महापूजा

श्री दत्त याग, सहस्र चंद्रदर्शन मुख्य उत्सव

101 सुहासिनीयों द्वारा गुरुदेव की आरती, तुलादान

वेदपाठी आचार्यों द्वारा स्वस्ति वाचन

मान-पत्र समर्पण व संत-समागम

15 नवंबर, संध्याकाल 4:00 बजे से

इस उत्सव के दौरान शक्तिपात साधन परंपरा, दत्त पंथ व विभिन्न आश्रमों के पीठाधीश्वर, संत, महापुरुषों की समय-समय पर उपस्थिति रहेगी उनके दर्शन और मार्गदर्शन का लाभ सभी साधकों, भक्तों को प्राप्त होगा

तिलक व बिंदी क्यों ?

हरेक साधक को भाल पर गुरुस्थान पर तिलक अनिवार्य रूप से लगाना ही चाहिए। हरेक साधिका को बिंदी लगानी ही चाहिए। कई साधिकाएं न जाने क्यों बहुत छोटी सी बिंदिया लगाती हैं। कई बार तो वह बिंदिया साफ तौर पर दिखती भी नहीं हैं। हमें तिलक का महत्व समझना चाहिए। किसी भी दीक्षित साधक की प्रथमदृष्टया जो निशानी है वह तिलक ही है। तिलक का सामाजिक, वैज्ञानिक और धार्मिक महत्व है। जैसे कोई महिला यदि तिलक नहीं लगाती है तो उसे पतिविहीन माना जाता है वैसे ही यदि कोई साधक तिलक नहीं लगाता तो वह निगुरा ही कहा जाएगा।

तिलक का सामाजिक महत्व यह है कि तिलक लगाने वाला हिन्दू जाति का प्रमाणित होता है। सनातनी होने की निशानी है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो चंदन का तिलक शरीर को शीतलता प्रदान करता है। इससे उद्विग्नता कम होकर गंभीरता आती है। वैसे ही कुंकुम का तिलक आत्मविश्वास बढ़ाता है। कुछ लोग सिंदूर का तिलक भी लगाते हैं उससे शौर्य में वृद्धि होती है। कुछ मान्यताओं में काला तिलक भी लगाते हैं वह अशुभ से बचाव करता है। कुल मिलाकर तिलक का अति महत्व है। तिलक का धार्मिक महत्व तो बहुत है। भाल पर तिलक लगाने से उग्र ग्रह शांत होते हैं। आस्था का दृढ़िकरण होता है। जो हिंदू तिलक लगाता है उसके न होने वाले कार्य भी संपन्न होने लगते हैं। तिलक नकारात्मकता को मिटाकर सकारात्मकता लाता है। आज्ञाचक्र को सक्रिय करने में भी तिलक महत्व है।

तिलक लगाने के यों तो कई प्रकार व आकार हैं। विधिपूर्वक तो बांई हथेली पर कुंकुम लेकर दांये हाथ की अनामिका से तिलक लगाएं। ऐसा न हो तो शलाका से, अन्य तरीकों से भी लगाया जा सकता हैं। वासुदेव कुटुंब के तो हर साधक को यह नियम बना लेना है कि रोज तिलक लगाए, विशेष रूप् से सद्गुरु के समक्ष तो बिना तिलक न आए। यह स्वहित में है।

आपकी अपनी प्रभु बा

-●✲●-

प्रकृति बड़ी विचित्र है इसमें संगति का असर तत्काल प्रभाव डालता है। इससे अनेक बार लाभ भी प्राप्त होता है। जैसे इत्र बेचने वाला भले ही इत्र ना लगाये पर उसके हाथ महकते ही हैं। पुष्प विक्रेता भी फूलों की सुगंध से प्रमुदित रहता ही है। संगति से परिवर्तन भी आते हैं यह कई घटनाओं से प्रमाणित है। संतों के संग रहने से दुष्ट व्यक्ति भी सहृदय और दयालु हो जाते हैं। जल की संगति से तप्त वस्तु भी शीतल हो जाती है। संगति से रूप भी बदलते देखे गए हैं, परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। जैसे दूध में पानी मिलकर दूध जैसा ही बन जाता है, कड़वा धुआं भी अगर, धूप आदि सुगंधित पदार्थ के साथ मिलकर सुगंधित हो जाता है। समरूप हो जाता है। लाभ हो, परिवर्तन हो या समरूपता हो यह सभी संगति के प्रत्यक्ष त्रिआयामी असर हैं।

सद्गुरु संगति भी ऐसी ही त्रिआयामी है। यह साधक के जुड़ते ही तात्कालिक लाभ का आशीर्वाद प्रदान करती है। ताकि साधन के प्रति साधक का अनुराग बढ़े। जब सद्गुरु को लगता है कि साधक

पहली श्रेणी लाभ से पार हो चुका है तो वह दूसरी श्रेणी परिवर्तन की परिकल्पना को लागू करता है। वह साधक से अपनी शक्ति जागृत करने का आग्रह करता है। कभी-कभी साथ बिठाकर साधन कराता है, कभी भजनों या काव्य से संदेश देता है तो कभी सेवा को स्वीकार कर साधक मन की निर्मलता को बढ़ाता है। तब उद्देश्य लाभ तक सीमित न होकर परिवर्तन तक का होता है। जब साधक उस श्रेणी को भी पार कर लेता है तो तीसरी श्रेणी में सद्गुरु उसे समरूप बनाने की तैयारी करता है। अब तक साधक लाभ के मोह से मुक्त हो जाता है, परिवर्तन को पचाने की क्षमता विकसित कर चुका होता है। तब सद्गुरु तीसरा अध्याय खोलता है, तीसरा सृजन का नेत्र उघाड़ता है, तीसरी गति प्रारंभ करता है। इसमें वह साधक को उन्मुक्त गगन में उड़ान भरने देता है, प्रसन्नता और आनंद की धाराओं में डुबकी लगाने देता है और शक्ति को शिव से संलग्न करने को प्रेरित करता है। यही सद्गुरु का मूल स्वभाव भी है और परंपरा द्वारा सौंपा गया कार्य भी। हम किस सोपान पर हैं यह खुद ही देखें। कहां तक जाना है यह खुद ही तय करें। यह तो स्वमूल्यांकन के सोपान हैं।

– स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

सहस्र चंद्रदर्शन के संदर्भ में

एक अद्भुत सुगंध

परमपूज्य परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद राजयोगी प्रभु बा एक ऐसा नाम है जो प्रचार प्रसार की दुनिया से भले दूर है पर साधना में मशहूर है। प्रभु बा का मुख्य आश्रम काशी शिवपुरी, ईंटालीखेड़ा, जिला सलूंबर, राजस्थान में है। प्रभु बा दत्त परंपरा की आध्यात्मिक धारा को पुष्ट करते हुए गुरु परंपरा के संवाहक हैं। राजाधिराज योगिराज श्री सद्गुरु गुलवणी जी महाराज (पुणे, महाराष्ट्र) से दीक्षित होकर आपने अपनी वह यात्रा प्रारंभ की जो किसी भी मानव का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य होता है। प्रभु बा की साधना पद्धति परंपरागत कर्मकांड, पूजा, अनुष्ठान के साथ-साथ भीतरी शक्ति के उदय के लिए ध्यान की है। जप के माध्यम से शारीरिक शुचिता का आधार तैयार कर आप ध्यान के शीर्ष तक साधकों को ले जाने में समर्थ हैं। करीब 50 वर्ष पूर्व आपने सामान्य गृहिणी के रूप में अपने सद्गुरु से ध्यान मार्ग की दीक्षा ली थी। ध्यान में गहरा उतरने की सहज वृत्ति के कारण आपको एकाधिक बार समाधि उपलब्ध हुई है। एक बार तो 21 दिन की समाधि भी लगी है। इसके बाद तो नव चेतना एवं कायाकल्प होकर आप परमहंस अवस्था को प्राप्त हो गए हैं। सद्गुरु के प्रति निष्ठा, विश्वास, आस्था तथा उनकी आज्ञा व अनुशासन में रहने का पर्यायवाची नाम है प्रभु बा। ध्यान में ही दादा गुरु परमपूज्य परमहंस श्री वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी महाराज द्वारा आपको नाम जप का आदेश मिला। तब से गत 30 वर्षों से आप

स्थान-स्थान पर अखंड नाम जप साप्ताहिकी के माध्यम से प्रभु नाम संकीर्तन का प्रसार कर रहे हैं। करीब 30 वर्ष पूर्व अपने सद्गुरु के ध्यान में मिले निर्देश से ही परमपूज्य शिवोम् तीर्थ स्वामी महाराज (देवास, मध्य प्रदेश) से संन्यास दीक्षा ग्रहण की है। संन्यास दीक्षा के बाद आपका जीवन ध्यान व शक्तिपात परंपरा को समृद्ध करने में ही समर्पित हो गया है। आपने हजारों साधकों को शक्तिपात दीक्षा देकर उनकी कुंडलिनी शक्ति को जागृत किया है। सहज, सरल व नियमित ध्यान के द्वारा आप साधकों को आनंदमय बनाने के लिए प्रयासरत हैं। प्रभु बा का मानना है कि कुंडलिनी साक्षात् शक्ति स्वरूपा है। यह मूलाधार पर कुंडली मार कर निष्क्रिय अवस्था में प्रत्येक मानव में स्थित है। इसे जगाया जा सके तो यह उर्ध्वमुखी होकर क्रमशः मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा आदि चक्रों का भेदन करते हुए सहस्रार तक जा सकती है। सहस्रार साक्षात् शिव है। शक्ति की भी शिव से मिलने की व्याकुलता रहती है पर उचित साधन तथा सही मार्गदर्शन के अभाव में व्यक्ति इस उपलब्धि को नहीं पा सकता है। इसलिए अनुभवी सद्गुरु अपनी शक्ति से उस सुषुप्त कुंडली को जागृत करके ध्यान द्वारा उर्ध्वयात्रा के लिए अनुकूलन कर देता है। नियमित ध्यान से शिव शक्ति के मिलन का अवसर आता है और वही सच्चा आनंद है उसी को चिदानंद, परमानंद आदि शब्दों से नामित किया गया है। उस आनंद की प्राप्ति के बाद समस्त दुर्गुणों की विलुप्ति और सभी सद्गुणों का जागरण हो जाता है। इस मार्ग के प्रचार-प्रसार के लिए प्रभु बा ने देश-विदेश में अनेक केंद्र स्थापित किए हैं। केंद्र यानी शक्ति जागरण के स्थल हैं जहां सुविधानुसार स्थानीय साधक साधना करते हैं। कुछ स्थानों पर आश्रम भी निर्मित हुए हैं ताकि आवासीय व्यवस्था के साथ साधना हो सके। प्रभु बा ने जप व ध्यान के द्वारा सुगंध पथ बनाया है। इस पथ का पथिक अपने सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भी आध्यात्मिक यात्रा का यात्री बन

सकता है। अध्यात्म के साथ-साथ पारिवारिक, मानसिक व अन्य प्रकार की विषमताओं को भी ध्यान, जप व अनुष्ठान के माध्यम से दूर किया जाने की व्यवस्था भी प्रभु बा ने प्रदान की है। समाज सेवा, वंचितों के लिए सहयोग तथा चिकित्सकीय सेवाओं के लिए भी प्रभु बा ने अपने आश्रमों के द्वार खोल रखे हैं। सच तो यह है कि इस लोक व उस लोक को साधने के लिए जो सेतु है या हो सकता है उसे प्रभु बा का आध्यात्मिक मार्ग कहा जा सकता है।

ऐसे विलक्षण सद्गुरु परमहंस राजयोगी प्रभु बा के जीवन में 1008 पूर्णिमा दर्शन का योग बन रहा है। इस अवसर को 'सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव' के रूप में साधक परिवार यानी वासुदेव कुटुंब आयोजित कर रहा है। इस आयोजन का मुख्य समारोह 15 नवंबर 2024 को होगा। इससे पूर्व 7 नवंबर 2024 से अखंड नाम जप साप्ताहिकी, शतचंडी, शतरुद्री, दत्त आदि प्रकार के यज्ञ संपन्न होंगे। देव दीपावली के पावन पर्व पर आयोजित इस महोत्सव में दीपमाल भी ज्योतित होगी। इसके अलावा संत-समागम, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक आयोजन भी रहेंगे।

इस संपूर्ण अनुष्ठान का उद्देश्य है जिस सद्गुरु परंपरा ने हमें दीर्घकाल तक सदेह सद्गुरु सन्निधि प्रदान की है उसका आभार ज्ञापन करना। साथ ही प्रभु बा के आगामी जीवन को दीर्घायु व स्वास्थ्य बनाए रखने की कामना भी करना है। 'सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव' के लिए प्रत्येक साधक ने यह संकल्प लिया है कि 'मेरे सद्गुरु, मेरा उत्सव, मेरी जिम्मेदारी।' प्रभु बा रूपी अद्भुत सुगंध के कण सर्वत्र लोकमंगल करें ऐसी शुभाशा है। –●❊●–

पाथेय-प्रसाद

प्रभु बा का अनुभव

गुरुकृपा अकल्पनीय है

बात उस समय की है जब हम गिरगांव में रहते थे। दुर्योग से भाऊ साहब को रीढ़ की हड्डी के मणके खिसक जाने की समस्या हो गई। इसके कारण वह उठ- बैठ भी नहीं सकते थे। पूरी तरह बिस्तर पर ही रहते थे। उस समय डॉक्टर गावंड जो मुंबई के अस्थि रोग विशेषज्ञ थे उनकी चिकित्सा चली थी। लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। डॉक्टर ने भी अंततः यह घोषणा कर दी कि अब भाऊ साहब कभी चल नहीं सकेंगे। लेकिन मुझे अपने गुरुदेव पर पूरा विश्वास था इसलिए मैंने उस विश्वास से डॉक्टर साहब से कहा कि मेरे पास डॉक्टर के भी डॉक्टर हैं वे सब ठीक करेंगे । एक दिन आप जब इन्हें देखने आओगे तो यह खुद चलकर दरवाजा खोलेंगे। बात असंभव सी थी लेकिन गुरुभक्ति के कारण सहसा मेरे मुंह से निकल गई। हालांकि डॉक्टर को मेरी इस यह बात पर ज्यादा विश्वास नहीं हुआ क्योंकि उनके पास विज्ञान का ज्ञान था उसके अनुसार उनका आकलन सही था। वे पराविज्ञान से अनभिज्ञ थे तथा आध्यात्मिक शक्ति व गुरुकृपा का उनको कोई अनुभव नहीं था। गुरुदेव की करुणा का तो कोई पार नहीं है।

संयोगवश एक दिन ऐसा ही हुआ कि मैं स्नान करने

बाथरूम में गई हुई थी। भाऊ साहब बिस्तर पर सोए थे वे खड़े होना तो दूर बिस्तर पर बैठ भी नहीं पाते थे। यहां तक की आवश्यक प्राकृतिक काम भी बेड पर सोये-सोये ही करना पड़ता था। घर के सभी सदस्य किसी न किसी काम से बाहर गए थे और घर में अन्य कोई नहीं था। तभी डॉक्टर गावंड का आना हुआ। उन्होंने दो-तीन बार कॉल बेल बजाई लेकिन कोई दरवाजा खोलने वाला था नहीं। कुछ देर बाद भाऊ साहब स्वयं बेड से उठे और दीवार के सहारे-सहारे चलते हुए घर का दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही सामने भाऊ साहब को खड़ा देखकर डॉक्टर तो दंग रह गये। जब तक मैं भी बाथरुम से बाहर आ गई थी। उन्हें मेरी कही हुई बात स्मरण हो आई। वे इस चमत्कारिक और असंभव परिवर्तन से आश्चर्यचकित थे। भावावेश में वह तो मेरे चरणों में गिर पड़े और कहने लगे आपकी गुरु भक्ति की जय हो। उसी दिन से भाऊ साहब बहुत तेजी के साथ सुधार की दशा में आए व अंततः इस रोग से मुक्त हो गये। मुझे गुरुशक्ति पर पहले से ही विश्वास था पर इस घटना से यह सिद्ध हो गया। सचमुच गुरु श्रद्धा की शक्ति अकल्पनीय है।

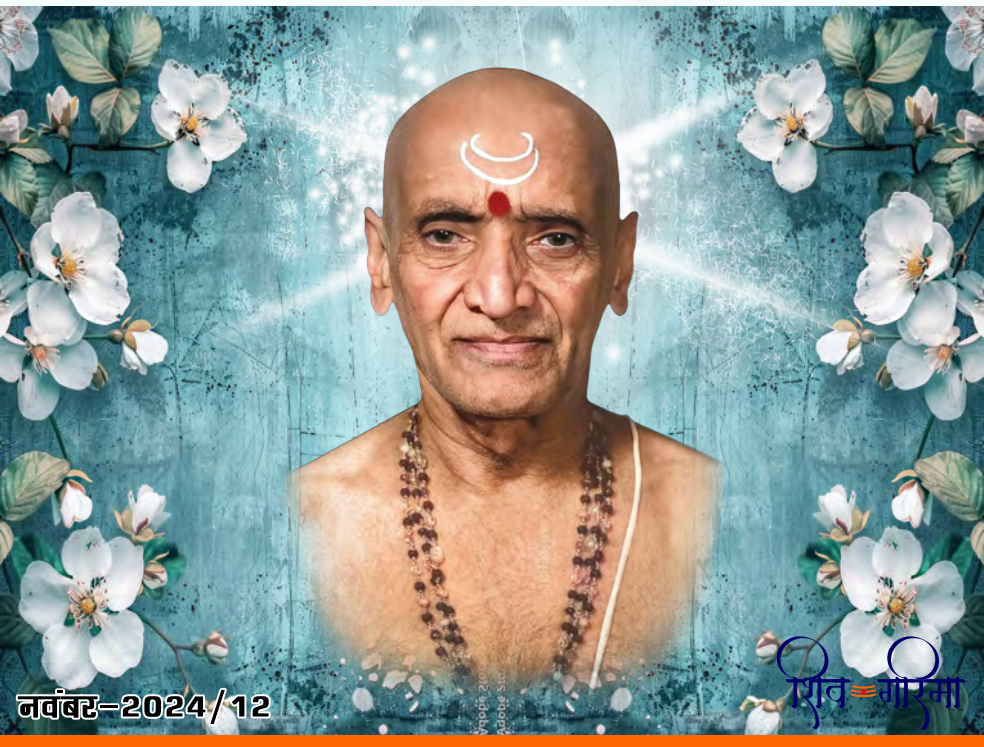

क्या है सद्गुरु कृपा? अनेक भक्त, अनेक साधक व अनेक शिष्य कहते रहते हैं कि सद्गुरु की कृपा हुई तो विवाह हुआ, नौकरी लगी, संतान हुई, मकान बना, रोगमुक्त हुए और अन्य नाना संपत्तियां मिलीं। हां, यह सद्गुरु कृपा है पर सद्गुरु कृपा का एक अंश ही है। यह कृपा तो सद्गुरु बिना साधन ही कर सकता है। बिना शिष्य बनाए भी यदि वह किसी पर प्रसन्न हो गया तो यह सारी की सारी भौतिक संपत्तियां एक पल में प्रदान करने में समर्थ है। फिर सद्गुरु ने यदि हमें अनुग्रह दिया, साधन बताया तो इसका अर्थ यही समझ में आता है कि वह हमें कुछ अलग जो इन संपत्तियों से भी मूल्यवान है वह देना चाहता है। सद्गुरु कृपा से अनुग्रह पाया, उन्होंने सत्संग का मार्ग सुझाया, सुंदर वाणी व भक्ति के अद्भुत प्रसंग सुनने, जानने का अवसर दिया तो भौतिक संपत्तियों से हमारा मोह शनैः शनैः कम होने लगा। हम भगवद्चिंतन करते हुए सद्गुरु महिमा के अनुभवों को समझने लगे। उनमें रस आने लगा। अपने ध्यान व जप के बारे में लोगों को बताने लगे। अपनी परंपरा को समृद्ध बनाने के लिए और इच्छुक

लोगों को भी जोड़ने लगे और कहने की आदत बनी कि यह सब सद्गुरु की कृपा से हो रहा है। हां, यह भी सद्गुरु कृपा ही है। उनकी कृपा की एक खिड़की खुली और हमारा रूपांतरण हुआ। हम पहले संसार के पीछे दीवाने थे अब सत्य का स्वाद भी लग गया है। पर यह सद्गुरु कृपा भी आंशिक ही है। हमें चाहिए पूरी की पूरी सद्गुरु कृपा और इसके लिए ही हम सद्गुरु सान्निध्य में हैं।

पूर्ण सद्गुरु कृपा यानी क्या? सद्गुरु ने हमारे लिए भौतिक सुखों की कामना की और वे मिले। यह उनकी माया है। वे चाहते हैं कि मेरे साधक भौतिक व स्थूल लोक की दृष्टि से सुखी रहें या यूं कहा जा सकता है कि तन के तल पर सुखी रहें।उन्होंने कृपा करके हमें सद् व असद् का भेद करने की बुद्धि दी। परंपरा के अनुसार साधन का मार्ग बता कर आध्यात्मिक पथिक बनाया। सत्संग के शब्दों का असर भी होने लगा, यह उनकी करुणा है। हमने अपना स्तर बढ़ाया तो सद्गुरु ने माया से ऊपर उठकर हमें करुणा का पात्र बनाया। हमें सद्गुरु की माया का स्वागत करना है, उनकी करुणा को हृदयंगम करना है। पर ध्यान रहे हम आए हैं सद्गुरु का प्रेम पाने। उन्होंने हमें बुलाया, बिठाया, बताया और गढ़ने का मन बनाया है। इसका आधार केवल और केवल प्रेम ही है। यह प्रेम ही हमारा ध्येय है।

प्रेम के लिए भौतिक संपदाओं का निस्पृह भाव से उपभोग करके आगे चलना है। माया में बसे रहना न तो हमारा लक्ष्य है न ही सद्गुरु का मंतव्य। हमें पूजा, पाठ, व्रत, अनुष्ठान, सत्संग, ग्रंथ, उत्सव आदि देकर सद्गुरु ने हमारा मन संतुष्ट किया है। ये दोनों ही चरण तन और मन की प्रसन्नता के हैं। यहां तक पहुंचना सबके लिए सुलभ और सरल सा है। सद्गुरु स्वयं सबको यहां तक ले आते हैं। अब यहां से आत्मा के आनंद की यात्रा प्रारंभ करनी होती है। यहीं से सद्गुरु की असली कृपा का द्वार खुलता है। इस द्वार में प्रवेश के लिए दो ही पात्रताएं हैं, एक तो ऐसा जप जिसमें नाम का रस रोम-रोम में समा जाए और अजपा जप स्वयं उद्घाटित हो जाए। नाम खो जाए, लय और ताल विलीन हो जाए और साधक की आत्मा सद्गुरु की आत्मा के पास जाकर खड़ी हो जाए। दूसरा है गहरा ध्यान। जिससे अंतर में संग्रहित अब तक का ज्ञान वाष्पित होकर उड़ जाए। उस रिक्त स्थान पर सद्गुरु का दिव्य प्रकाश भर जाए। विचार मरने लगे, मौन मुखर होने लगे, आनंद के क्षण घटित होने लगे और सद्गुरु कृपा के रस की बूंद का अमृत अनुभव होने लगे। सद्गुरु हम पर ऐसी ही कृपा करने आए हैं। यही सच्ची सद्गुरु कृपा है। हमारी आंशिक तैयारी भी हमें पूर्ण कृपा के स्रोत तक ले जा सकती है। –●✻●–

गुरु गोरखनाथ के विषय में प्रचलित है कि एक बार भिक्षाटन के क्रम में गुरु मत्स्येन्द्रनाथ किसी गांव में गए। किसी एक घर में भिक्षा के लिए आवाज लगाने पर गृह स्वामिनी ने भिक्षा देकर आशीर्वाद स्वरूप पुत्र की याचना की। गुरु मत्स्येन्द्रनाथ सिद्ध तो थे ही। अतः गृह स्वामिनी की याचना स्वीकार करते हुए उन्होंने एक चुटकी भर भभूत देते हुए कहा कि इसका सेवन करने के बाद यथासमय वे माता बनेंगी। उनके एक महा तेजस्वी पुत्र होगा जिसकी ख्याति चारों और फैलेगी।

आशीर्वाद देकर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ अपने भ्रमण क्रम में आगे बढ़ गए। बारह वर्ष बीतने के बाद गुरु मत्स्येन्द्रनाथ उसी ग्राम में पुनः आए। कुछ भी नहीं बदला था। गांव वैसा ही था। गुरु का भिक्षाटन का क्रम अब भी जारी था। जिस गृह स्वामिनी को अपनी पिछली यात्रा में गुरु ने आशीर्वाद दिया था, उसके घर के पास आने पर गुरु को बालक का स्मरण हो आया। उन्होंने घर में आवाज लगाई। वही गृह स्वामिनी पुनः भिक्षा देने के लिए प्रस्तुत हुई। गुरु ने बालक के विषय में पूछा। गृहस्वामिनी कुछ देर तो चुप रही, परंतु सच बताने के अलावा उपाय न था। उसने तनिक लज्जा, थोड़े संकोच के साथ सब कुछ सच सच बतला दिया। उसने कहा कि आप से भभूत लेने के बाद पास-पड़ोस की स्त्रियों ने राह चलते ऐसे किसी साधु पर विश्वास करने के लिए उसकी खूब खिल्ली उड़ाई। उनकी बातों में आकर मैंने वह भभूत को पास के गोबर से भरे गड्ढे में फेंक दिया था।

गुरु मत्स्येन्द्रनाथ तो सिद्ध महात्मा थे। उन्होंने अपने ध्यानबल से देखा और वे तुरंत ही गोबर के गड्ढे के पास गए और उन्होंने बालक को पुकारा। उनके बुलावे पर एक बारह वर्ष का तीखे नाक नक्श, उच्च ललाट एवं आकर्षण की प्रतिमूर्ति स्वस्थ बच्चा गुरु के सामने आ खड़ा हुआ। गुरु मत्स्येन्द्रनाथ बच्चे को लेकर चले गए। यही बच्चा आगे चलकर गुरु गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदरनाथ) थे। –●✻●–

एक शुभचिंतक की जुबानी

बात तब की है जब सारे देश में राम जन्मभूमि आंदोलन अपने चरम पर चल रहा था। एक सकारात्मक वातावरण बन गया था। सबके मन में था कि रामजन्म भूमि को मुक्त कराकर टेंट में बिराजे रामलला के लिए मंदिर बनाना है। मुद्दा था जहाँ राम का जन्म हुआ उसी स्थान पर मंदिर बनाना है। उस स्थान पर वर्षों पूर्व अन्य धर्मावलंबियों द्वारा उनका धर्मस्थल बना दिया गया था । आंदोलन के अंतर्गत कारसेवकों का कूच अयोध्या की तरफ़ हो रहा था । गाँव गाँव से राम भक्त कार सेवा के लिए जा रहे थे। मुझे भी सौभाग्य मिला। मैं भी कारसेवक के रूप में अयोध्या प्रस्थान करने वाला था।

उसी समय की बात है की परमपूज्य प्रभु बा का बांसवाड़ा क्षेत्र में पधारना हुआ । मन में था कि ऐसे शुभ कार्य के लिए जाते समय संतों का आशीर्वाद लेकर के जाना उचित रहेगा। इस उद्देश्य से मैंने वहाँ उनके दर्शन किए और अपना मंतव्य बताया । प्रभु बा बहुत प्रसन्न हुए तथा आशीर्वाद दिया। साथ ही लाल कपड़े में बँधा हुआ एक श्रीफल प्रदान किया और कहा कि आपका मनोरथ पूर्ण होगा। यह श्रीफल उस स्थान पर उस भूमि पर स्थापित कर देना । जिस उद्देश्य के लिए आप जा रहे हैं वह पूर्ण होगा। मैं बहुत

श्रद्धापूर्वक वह श्रीफल लेकर के कार सेवा हेतु अयोध्या पहुँचा। मार्ग में अनेक बाधाएँ आईं पर हम किसी भी तरह नियत तिथि और नियत स्थान पर पहुँच गये। उस दिन ऐतिहासिक घटना घटी और तथाकथित ढांचा गिरा दिया गया। सब के मन में आनंद था। मैं भी प्रभु बा द्वारा दिया गया श्रीफल उस स्थान पर चढ़ाकर लौट आया। प्रभु बा के आशीर्वाद का स्पष्ट अनुभव हो गया था। मुझे लगता है कि यह मेरे जीवन में प्रभु का आशीर्वाद था और उनके आशीर्वाद से ही हमारा उद्देश्य सफल हुआ। (जैसा कि श्री भुवन जी पंड्या, बांसवाड़ा के धर्मप्रेमी व गो सेवक द्वारा प.पू प्रभु बा के समक्ष बताया गया)–●✻●–

1. श्रीमती स्वस्ति पांडे, केलिफोर्निया

करुणामय गुरुदेव

गत 13 जुलाई की बात है। हम दो परिवार अलास्का घूमने के लिए गए। अलास्का अमेरिका का प्राकृतिक दृष्टि से संपन्न क्षेत्र है और वहां पर काफी पहाड़, घाटियां व प्रकृति की मनोरम छटाएं हैं। पर्वतीय मार्ग होने से रोड़ ज्यादा चौड़े नहीं हैं। हम 8 सीटर गाड़ी लेकर गए थे जिसमें मेरा परिवार और एक परिचित परिवार और था। उस परिवार में एक युवक अमेरिका में नया-नया ही आया था वह गाड़ी चला रहा था। अलास्का के उस मार्ग पर सब अनुशासित ड्राईविंग करते हैं। ओवरटेक मना है।

वह युवक भारतीय सड़कों पर गाड़ी चलाने का अनुभवी था। जैसी उसकी प्रकृति थी वह तेज चलते हुए ओवरटेक करने की कोशिश कर रहा था। पहले ओवरटेक में एक गाड़ी सामने आई और उसने अपनी गाड़ी दबाकर बचा लिया। सब घबरा गए थे लेकिन उसने कहा घबराने की कोई बात नहीं है। थोड़ी देर बाद दूसरी गाड़ी आई और उसने खतरनाक ढंग से ओवरटेक करते हुए बचाया

इसके बावजूद भी उसे समझ नहीं आया। हम घबरा रहे, मना कर रहे पर वह माना नहीं। तीसरी बार फिर उसने ओवरटेक किया तो सामने से लिए गाड़ी रगड़ खाती हुई निकल गई हालांकि किसी को चोट नहीं आई लेकिन सभी दहशत में थे। मैं तो मन ही मन गुरुदेव का स्मरण कर रही थी और उस भय से मुक्त होने का प्रयास कर रही थी। घूम फिर कर जब घर पर लौटे तो घर का दरवाजा खोला, हाल में घुसते ही देखा कि गुरुदेव का फोटो जमीन पर गिरा हुआ है। आश्चर्य की बात थी कि उस दिन न आंधी आई थी ना तूफान आया था फिर यह फोटो दीवार से नीचे कैसे गिर गया? थोड़ी देर बाद आंख बंद करके सोचा तो अनुभव हुआ कि हमारे संकट को गुरुदेव ने अपने ऊपर ले लिया। जिस तरह से गाड़ी टकराई और लहराई उसके प्रभाव से गुरुदेव का चित्र दीवार से छिटक कर नीचे गिर गया था। चित्र उठाकर श्रद्धाभाव से गुरुदेव का धन्यवाद ज्ञापित करने के अलावा मेरे पास और कुछ था ही नहीं, जय गुरुदेव।

-●✻●-

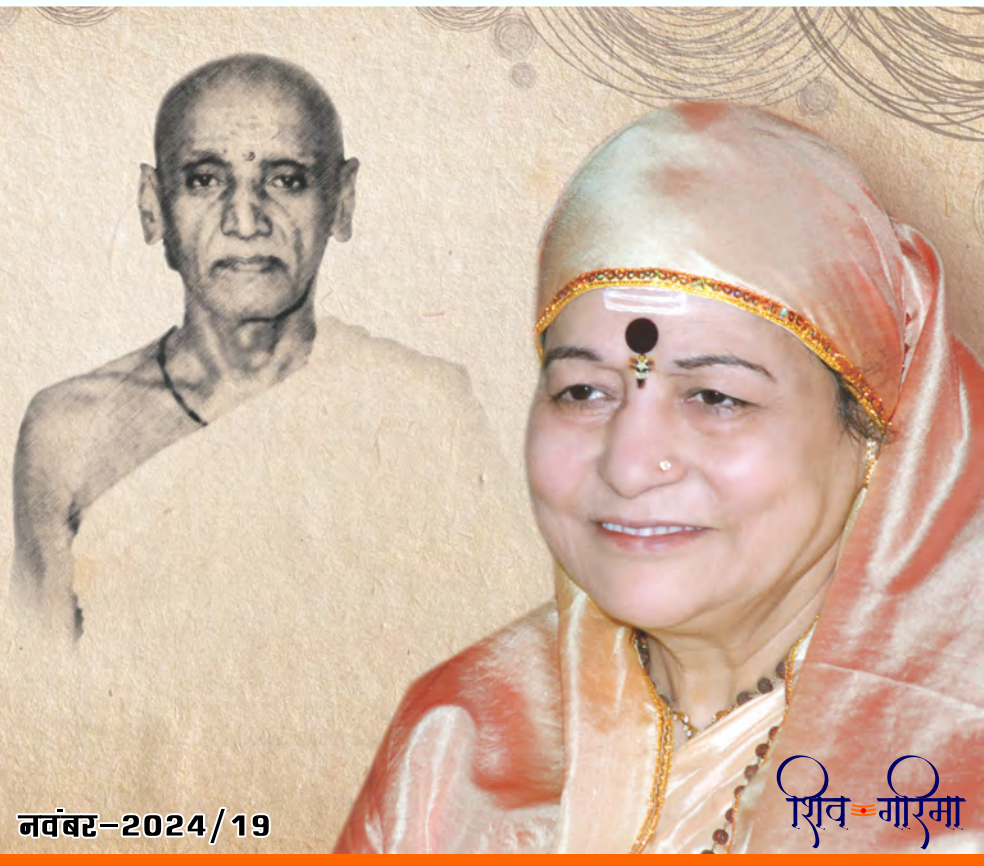

गुरुप्रेम अद्वितीय है

मैं ICICI बैंक में डिप्टी ब्रांच मैनेजर के पद पर कार्यरत हूँ। मैंने को-ऑपरेटिव क्षेत्र में ऑडिटर की परीक्षा भी पास कर रखी थी तो मेरी इच्छा थी कि मैं बैंक की नौकरी छोड़कर अपना काम प्रारंभ करूं ताकि ज़्यादा सेवा कर सकूं।इसके लिए मैंने गुरुदेव से पूछा तो उन्होंने मना कर दिया और कहा कि जल्दबाज़ी नहीं करना। मैं आश्चर्यचकित थी कि प्रभु बा ने मना क्यों किया? मैं बचपन से ही गुरुदेव के सान्निध्य में रही इसलिए मुझे उनकी बात मानने में कोई एतराज़ भी नहीं हुआ। गुरु आज्ञा सर्वोपरि।सन् 2023 के मध्य में मुझे लगा कि मेरे ब्रेस्ट में कोई गाँठ है पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। कोई ख़ास तक़लीफ़ भी नहीं थी। बस बायोप्सी ज़रूर करा ली।मैं शिवपुरी आने का और पार्थेश्वर पूजा में सम्मिलित होने का कार्यक्रम बना रही थी तभी रिपोर्ट आयी कि ब्रेस्ट की गाँठ कैंसर की और सेकंड स्टेज में है। मुझे बीमारी कैंसर से इतना बुरा नहीं लगा बल्कि बुरा इसलिए लगा कि शिवपुरी जाना नहीं होगा। खैर परिवारजनों के साथ तीन अलग अलग डॉक्टरों से सलाह ली। एक डॉक्टर जो टाटा हॉस्पिटल से ही निकले थे तथा खुद का अस्पताल खोला था और मेरे जियाजी के परिचित थे उनसे इलाज की बात चली। स्वभाववश फिर गुरुदेव से पूछा तो उन्होंने कहा कि हमें इलाज टाटा हॉस्पिटल में ही कराना है।उन डॉक्टर के सहयोग से तुरंत टाटा हॉस्पिटल में एडमिशन भी मिल गया और ऑपरेशन की तारीख़ भी तय हो गई। सर्जरी हुई, उसके बाद कीमोथेरेपी की आठ डोज़ लगनी थी। कीमोथेरेपी के बाद रोगी की जो हालत होती है उसे अनुभवी लोग दूसरी मौत ही मानते हैं। पर मुझे कीमोथेरेपी के बाद कोई बड़ी समस्या नहीं आयी। न वज़न घटा, न भूख मरी, न बेचैनी हुई। हाँ नाख़ून काले पड़े और बाल झड़े। मैं तो कीमो के समय भी

और बाद में भी मिलने वाले और परिवार वालों से गुरुदेव और ध्यान मार्ग की ही चर्चा करती रहती थी। चार कीमो लगने के बाद मेरे पिताजी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा तो मैं एकमात्र संतान होने के कारण उन्हें संभालने के लिए जुट गई। कीमो भी चलते रहे और उनकी सुश्रुषा भी होती रही। यह आश्चर्य था पर गुरुकृपा से असंभव को संभव होते हुए मैंने अनेक बार देखा है। हालाँकि पिताजी तो नहीं रहे यह दुखद था पर नियति को शायद यही मंज़ूर होगा। मेरी चिकित्सा के दौरान शिवपुरी में बातचीत होती रहती थी। एक बार स्वयं गुरुदेव फ़ोन पर आए और वे मराठी में बोले जिसका भावार्थ था कि घबराना नहीं सब ठीक होगा। यह तो मेरे लिए रक्षा कवच से भी ज़्यादा कारगर सुरक्षा थी।इस अनुभव के बारे में कहने को बहुत कुछ है पर विस्तार भय से सीमित शब्दों में बयां कर रही हूँ ।आज मुझे ध्यान आता है क्यों गुरुदेव ने मुझे बैंक का जॉब छोड़ने को मना किया था । उस जॉब के कारण ही मेरे समस्त इलाज का ख़र्चा बैंक ने वहन किया था। यदि मैं अपना नया कार्य कर लेती तो शुरुआत में इतना पैसा कहाँ से आता? ऑपरेशन व बाद के इलाज के समय मुझे कई बार अनुभव हुआ कि गुरुदेव मेरे साथ कंधे पर हाथ रखकर चल रहे हैं। इस स्थिति में कोई मौत से भी क्यों डरेगा ? बस मलाल यही रहता था की मेरे कारण गुरुदेव को ऐसे स्थान पर आना पड़ रहा है । मेरी पहले भी गुरुनिष्ठा भरपूर थी पर इस बीमारी के दौरान हुए अनुभव ने मुझे गुरुभक्ति और गुरुकृपा की गूढ़ता का ज्ञान करा दिया। उऋण होना मुश्किल है और सच तो यह है कि गुरुप्रेम से उऋण होना भी कौन चाहता है ?–●✻●–

शब्दों की माला

(साधकों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति)

श्रीमती आभा पाल, रायपुर

सद्गुरु का साथ
देता है विशिष्टता का भान,
अद्भुत अभिमान।
कुबेर का धन,
वृन्दावन के वन,
गरबा और रास का आह्लाद और उल्लास।
शिवपुरी में हो वास,
साक्षात् शिव के पास।
ज्यों माता के जस गीत,
चिड़ियों का कलरव मधुर संगीत।
ज्यों बचपन का साथी,
कोई प्यारा सा मीत।
जगमगाता संसार,
हर वक्त त्योहार।
एक साथ होली, दीवाली, दशहरा,
सारा संसार दिखे मुझे रंगीन हरा-भरा।
दया और कृपा का सागर भी
ज्यों पूरा छलछलाता हुआ है भरा।
सुदूर पहाड़ों पर बसा,
एक सुन्दर सा गांव।
हमें खींचता है
जहां जीवन को भी जीवन देती है
सद्गुरु के आंचल की छांव।
दर्शन का तरसे है नयन
यादों में हैं बीते बरस।
सद्गुरु मेरे !
कब होंगे तेरे दरस,
अब कब होंगे तेरे दरस?

-●✻●-

रचनात्मकता का आनंद

(साधकों द्वारा निर्मित भावकृतियां)

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण
संस्थिता, नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो
नमः।।

सम्मति

बात कहां तक पहुंची

श्रीमती निर्मला शर्मा, उदयपुर

सद्गुरुदेव के प्रेरणादायी पथप्रदर्शन के रूप में अनेक अनुभवों एवं प्रेरक प्रसंगों से सजी-धजी 'शिव गरिमा' हमारा मार्गदर्शन करती है। हमारे लिए अपने सद्गुरुदेव के बताए साधना पथ पर नियमित निरंतर चलकर परमानंद प्राप्ति का बहुत ही उत्कृष्ट एवं अनुभूत साधन है। यह पत्रिका जिसे पढ़कर, मनन-चिन्तन कर जागृत होने की प्रेरणा मिलती है। इसमें इतने सुन्दर और प्रेरणादायी अनुभव और ज्ञान है जैसे कि हमारे गुरुदेव दिखते हम जैसे ही हैं पर उनमें और हममें भारी अंतर है जिसे हम समझ नहीं पाते। सद्गुरु हमें हर पल जगाते हैं। बाह्य जगत् से परे आन्तरिक जगत् में हम थोड़ा भी उतरते हैं तो सद्गुरु प्रसन्न होकर हमें बुलाते हैं।

वे हमें बताते हैं कि हमारे भीतर सुषुप्त निष्क्रिय अवस्था में कुंडलिनी शक्ति है जो साक्षात् शक्तिस्वरुपा है। इसे जगा कर शक्ति को शिव से मिलाया जा सकता है। यह उपलब्धि हमें कैसे प्राप्त हो इसको सत्संग में एवं इस शिव गरिमा में अपने अनेक अनुभवों द्वारा समझाते हैं। चलना तो हमें ही पड़ेगा, अपना रास्ता स्वयं को ही बनाना होगा। सद्गुरु हमारा हाथ थामे सदैव हमारे संग हैं। पत्रिका को जब पढ़ते व श्रवण करते हैं तो गुरुदेव के अनुभवों को पढ़-सुनकर रोम-रोम पुलकित हो जाता है और मन साधन की ओर स्वतः अग्रसर होता है। चाहे जो हो हमें ध्यान में बैठना ही है और गहरे उतरना है। फिर हमें गुरुदेव आनंदमयी यात्रा करवायेंगे। शिव गरिमा में गुरुदेव के विशिष्ट अनुभव जिसमें अखंड नाम जप साप्ताहिकी में अपनी परम शिष्या के लिए स्वयं बड़े गुरुदेव का आकर जप करना यह पढ़कर तो ऐसा लगा कि हम परम सौभाग्यशाली हैं कि बड़े गुरुदेव हमारे गुरुदेव का संकल्प रखने के लिए आते हैं। यह बहुत ही गौरवशाली एवं प्रेरणास्पद है।

परमादरणीय स्वामीजी द्वारा वर्णित स्वामी दयानंदजी का प्रसंग अति प्रेरक है। वे अपने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए अपनी समस्त विद्याओं को एक क्षण में तिरोहित कर देते हैं। यह पढ़कर लगता है कि हम तो कण मात्र भी नहीं कर पा रहे हैं। हमारे सद्गुरु तो हमें दिये जा रहे हैं हमारी ही झोली ठीक से खुली भी नहीं है। सत्संग, सद्गुरु के प्रत्यक्ष दर्शन सभी हमें प्राप्त हैं। हमें तो बस बढ़ते जाना है। वे हमें उस परमानंद की दुनिया में ले जाएंगे। शिवगरिमा का हर अंक बहुत कुछ बता जाता है। ?

आपकी सहभागिता आमंत्रित

आपको अपने केन्द्र के व्हाट्स एप ग्रुप से हर महीने 'शिव गरिमा ' पत्रिका मिल रही होगी और आप पढ़ भी रहे होंगे। यह पत्रिका अपने आश्रम, शक्तिपात परंपरा व गुरुदेव को समझने में सहायक है। इसलिए वासुदेव कुटुंब के हरेक सदस्य को इसे देखना चाहिए। आपसे निम्नलिखित प्रकार से भागीदारी अपेक्षित है-

1. यदि आपको किसी कारण से यह पत्रिका नहीं मिलती है तो आप इसकी प्रति व स्वर रूप स्वामी गुरुराज से मंगवा सकते हैं। 2. आप इसे पढ़ सुनकर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें। 3. आप अपना अनुभव, जिज्ञासा आदि भी भेज सकते हैं। 4. साधकों के लिए काव्य व मीम्स के लिए भी प्रकाशन की व्यवस्था है। आप साधना, गुरुदेव या आध्यात्मिक विषयों पर ये बनाकर प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। 5. भविष्य में और क्या जोड़ा जा सकता है, यह सुझाव दे सकते हैं। 6. अपने साथी साधकों को इसे पढ़ने, सुनने के लिए प्रेषित कर सकते हैं। 7. शिव-गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं। 8. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विशेष रूप से केन्द्र संचालक एक प्रति केन्द्र पर अवश्य रखें । 9. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें। आशा है यह बात यथाभाव आप तक पहुंचेगी ।

केंद्र संचालकों के लिये निर्देश - हर महीने शिव गरिमा का डिजीटल प्रकाशन हो रहा है। उसकी ऑडियो/विडियो फाइल भी आपको भेज रहे हैं। आप सभी केंद्र संचालकों को निर्देश है कि आप अपने शहर अथवा आश्रम में होने वाले मासिक अखंड नाम संकीर्तन के पूर्णाहुति के पश्चात इसे ऑडियो/विडियो सिस्टम पर सभी साधकों को सुनाएं। अगर आपके शहर/ गाँव मे नियमित जाप नहीं हो रहा तो आप अपने केंद्र पर सत्संग के पश्चात् भी इसे सुना सकते हैं। इस प्रक्रिया को हमें हर माह के हर अंक के प्रकाशन के बाद करना है। जयश्रीकृष्ण। -स्वामी हृदयानंद

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित
काशी शिवपुरी आश्रम, ईंटालीखेड़ा, जिला-सलुम्बर (राज.)
से प्रकाशित 'शिव-गरिमा' ई-मासिकी, निः शुल्क

संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद (गुरुराज)
मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा)
ग्राफिक्सः प्रमोद सोनी, स्वरः संजय शुक्ला, ध्वनि संयोजनः विजय पांडे

संपर्क सूत्र -आश्रम : 9929681423
स्वामी दादाः 9950502409 संपादक : 9414740814, 8302694012

शिव गरिमा के सभी
pdf और audio files के लिए
QR Code Scan करें

www.prabhubaa.com,
Prabhu Baa App